निशंक न्यूज

कोई शंका नहीं...

हिन्दी साप्ताहिक

RNI: UPHIN /2023/84309

27.0° अधिकतम 14.0° न्यूनतम

मूल्य: रू. 2/-

वर्ष: 02 | अंक: 48

कानपुर: सोमवार

10.03.2025

पेज 08

होलाष्टक में मनी दीवाली

भारत बना चैंपियन तो आतिशबाजी से गूंजा शहर मुस्लिम क्षेत्रों में भी तरावीह के बाद छूटे पटाखे

■ अभिलाष बाजपेई

कानपुर: *वैसे तो होलाष्टक में कोई शुभ काम नहीं होता है और पटाखे शुभ काम में ही छुड़ाए जाते हैं, लेकिन जब आज भारत ने चैंपियंस ट्रॉफी जीती तो दुबई के साथ ही कानपुर व भारत के विभिन्न शहरों में होलाष्टक के समय में दीपावली मनाई जाने लगी। शास्त्रों के अनुसार होलाष्टक में कोई शुभ काम नहीं होता है, लेकिन बात राष्ट्र प्रेम की थी तो सब नियम पीछे रह गए। किदवई नगर का इलाका हो या जूही सफेद कॉलोनी, तलाक महल हो या पी रोड हर जगह रविवार को दीपावली जैसा नजारा था। राष्ट्र की जीत पर लोग होलाष्टक भूले और ताराबीह से निकलने के बाद देश प्रेमी मुस्लिमों ने खूब आतिशबाजी की। भारत ने कई साल बाद जब चैंपियन ट्रॉफी पर कब्जा किया तो दुबई स्टेडियम में रोहित शर्मा और विराट कोहली डांडिया करते नजर आए। देश प्रेम की यह भावना सभी में बनी रहे यह निशंक न्यूज की कामना है।*

मैट हेनरी चोटिल होने की वजह से नहीं खेले

न्यूजीलैंड के तेज गेंदबाज मैट हेनरी फाइनल में नहीं खेल रहे हैं। उनकी जगह नाथन स्मिथ को टीम में शामिल किया गया। स्मिथ टीम के लिए 7 वनडे खेल चुके हैं। हेनरी साउथ अफ्रीका के खिलाफ सेमीफाइनल मुकाबले में चोटिल हुए थे। वे फील्डिंग के दौरान 29वें ओवर में हेनरिक क्लासेन का कैच लेने की कोशिश में लॉन्ग ऑन की ओर दौड़े और डाइव लगाई। उन्होंने यह कैच तो पकड़ लिया, लेकिन चोटिल हो गए। रविवार को मैच से पहले उन्होंने प्रैक्टिस के समय बॉलिंग की प्रैक्टिस की लेकिन टीम फिजियो ने उन्हें फिट घोषित नहीं किया। बाद में उन्हें मैच से बाहर होने पड़ा।

रचिन को 2 ओवर में 3 जीवनदान

- 7वें ओवर में रचिन रवींद्र को जीवनदान मिला। ओवर की तीसरी बॉल पर मोहम्मद शमी से रचिन का कैच ड्रॉप हो गया। शमी की लेंथ बॉल को रवींद्र रोकना चाहते थे, बॉल बैट से लगकर बॉलर शमी की दिशा में गई, लेकिन वे कैच नहीं कर सके। बॉल शमी की उंगली में लगी। ऐसे में फिजियो को मैदान पर आना पड़ा। यहां रचिन 28 रन पर बल्लेबाजी कर रहे थे। आठवें ओवर में रचिन रवींद्र रिव्यू लेने की वजह से बच गए। वरुण के ओवर की पहली बॉल पर रचिन ने स्वीप शॉट खेला, लेकिन बॉल मिस कर गए। बॉल विकेटकीपर केएल राहुल के पास गई। राहुल ने अपील की और अंपायर ने आउट का फैसला दिया। रचिन ने तुरंत रिव्यू लिया और डीआरएएस में पता चला कि बॉल रचिन के बल्ले पर नहीं लगी थी। आठवें ओवर में ही रचिन को तीसरा जीवनदान मिला। श्रेयस अय्यर ने 8वें ओवर में 29 रन पर रचिन का कैच छोड़ा। उन्होंने कैच लेने के लिए डीप मिडविकेट पर दौड़कर स्लाइड किया, लेकिन कैच ड्रॉप हो गया।

कुंभ की सफलता के साथ भाजपा के नंबर एक नेता बने योगी, यूपी की आर्थिक हालत में भी होगा सुधार,व्यापार भी बढ़ा गया कुंभ

मिल गया राजनीतिक अमृत

सरस वाजपेयी

प्रयागराज में संपन्न हुआ कुंभ आम श्रद्धालुओं को अमृत पान कराने के साथ ही प्रदेश के सत्ताधारी राजनीतिक दल भारतीय जनता पार्टी के साथ ही यहां के मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ को भी राजनीतिक अमृत भी दे गया। कुंभ से जहां देश के करोडों लोगों को धार्मिक रूप से अमृत दिया वहीं प्रदेश के लाखों को रोजगार। इन सबके साथ ही कुंभ की सफलता ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का भाजपा में कद काफी बढ़ा दिया और वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बाद पार्टी के साथ ही आम लोगों की पहली पसंद बन गये।

करीब 144 साल पड़े इस महाकुंभ की सफलता के लिये प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ ने पूरी ताकत लगा दी थी उन्होंने पूरे देश में आम लोगों के बीच कुंभ का आकर्षण पैदा करने के लिये अपने पूर राजनीतिक अनुभव के साथ ही अपने प्रशासनिक अनुभव को भी झोंक दिया था। स्वयं एक-एक दिन की गतिविधि पर नजर रख रहे मुख्यमंत्री आदित्यनाथ ने प्रदेश के सभी अनुभवी पुलिस व प्रशासनिक अधिकारियों को उनकी पसंद के हिसाब से काम पर लगाया जिसका नतीजा यह रहा कि महीने भर में देश के करीब साठ करोड़ से ज्यादा लोग प्रयागराज में कुंभ में अमृत स्नान करने पहुंचे और यहां किसी को ज्यादा समस्या नहीं हुई हां ज्यादा श्रद्धालुओं के पहुंचने के कारण प्रयागराज के मार्ग पर कई बार जाम जरूर लगा लेकिन इस भीषण जाम के बाद भी प्रशासनिक अधिकारियों ने श्रद्धालुओं को ज्यादा दिक्कत नहीं होने दी।

भाजपा के जानकार लोगों की मानी जाए तो इतने बड़े कुंभ मेले को सफलता से संपन्न करा लेने से भाजपा के साथ ही आम लोगों के बीच भी मुख्यमंत्री योगी नाथ की छवि सबसे लोकप्रिय नेता के रूप में बना दी। अभी तक भाजपा में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को देश के सबसे लोकप्रिय नेता के रूप में जाना जाता था लेकिन इस कुंभ की सफलता के बाद योगी आदित्य नाथ की लोकप्रियता का ग्राफ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लगभग बराबर कर दिया।।

भाजपाईयों के बीच हो रही चर्चाओं पर भरोसा किया जाए तो मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने महाकुंभ के सफल समापन में अपनी प्रशासनिक क्षमता दिखाई वह राष्ट्रीय स्वयं संघ के अगुवाकारों के साथ ही संघ से जुड़े लोगों के मन में भी घर कर गया और संघ से जुड़े लोगों के साथ ही आम लोगों के बीच यह चर्चा शुरू हो गई है कि अगर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 75 साल की उम्र में स्वयं को सत्ता की राजनीति से अलग करते हैं तो भाजपा के अगले प्रधानमंत्री के रूप में योगी आदित्य नाथ स्वयं सेवक संघ के साथ ही भाजपा के आम कार्यकर्ताओं की पहली पसंद हो सकते हैं।

प्रदेश की आर्थिक स्थिति होगी मजबूत: व्यापार तथा आर्थिक मामलों से जुड़े लोगों की मानी जाए तो कुंभ मेले में जुटी भीड़ के चलते प्रयागराज के लोगों के साथ ही इससे जुड़े जनपदों तथा उत्तर प्रदेश के अन्य जनपदों के व्यापारियों को काफी आर्थिक लाभ हुआ आने वाले समय में कुंभ की सफलता का असर ऊत्तर प्रदेश की अर्थ व्यवस्था में भी पड़ सकता है।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर कानपुर प्रेस क्लब द्वारा

महिला सम्मान समारोह का किया गया आयोजन

निशंक न्यूज संवाददाता

कानपुर: कानपुर प्रेस क्लब की ओर से महिला दिवस पर महिला पत्रकार सम्मेलन एवं सम्मान समारोह का आयोजन बड़े ही धूमधाम से आयोजित किया गया जहां पर कानपुर प्रेस क्लब के पदाधिकारियों ने महिलाओं का विशेष सम्मान किया तत्पश्चात सामाजिक उत्थान में महिला पत्रकारों की भूमिका पर गोष्ठी भी हुई कार्यक्रम में बतौर मुख्य अथिति न्यूज़-24 की मशहूर प्राइम टाइम एंकर एवं वरिष्ठ पत्रकार आशा झा और विशिष्ट अथिति प्रेस कौन्सिल की पूर्व सदस्य वरिष्ठ पत्रकार डॉ. सुमन गुप्ता मौजूद रही। इस अवसर पर कानपुर प्रेस क्लब के अध्यक्ष सरस बाजपेई और महामंत्री शैलेश अवस्थी द्धारा कार्यक्रम मे सम्मिलित हुयी महिलाओं का बुके देकर व प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया । इसके साथ ही मेयर प्रमिला पांडे, विधायक नीलिमा कटियार, मुख्य विकास अधिकारी दीक्षा जैन, आईपीएस अंजलि विश्वकर्मा और आईएमए अध्यक्ष डॉ. नंदिनी रस्तोगी सहित पांच महिला पत्रकारों को सम्मानित भी किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि आशा झा ने कहा कि कानपुर प्रेस क्लब द्वारा यह विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया है बहुत ही सराहनीय है इस कार्यक्रम से महिलाओं के सम्मान के लिए लोगों को प्रेरणा मिलेगी। इस अवसर पर आशीष त्रिपाठी, प्रशांत त्रिपाठी, विनीत बाजपेई, सत्यप्रकाश,गुप्ता, सोनू साहिल,पत्रकार चंदन जायसवाल ,आनंद शर्मा अभिषेक,शशांक शुक्ला, आदि लोग मौजूद रहे।

योगी सरकार के प्रयास से 2000 से अधिक विधवाएं होली खेलकर 'गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड' व इतिहास में दर्ज कराएंगी नाम, गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड की टीम की मॉनिटरिंग में सामाजिक संस्थाओं के साथ मिलकर 'विधवाओं की होली- 2025' का आयोजन करेगा उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग

इस बार उमंग के अनूठे रंग में सराबोर होगी वृंदावन की होली

निशंक न्यूज ब्यूरो

लखनऊ। उल्लास-उमंग और रंगों का पर्व होली इस बार वृंदावन में एक अलग आभा मे सराबोर दिखेगा। मथुरा-वृंदावन की होली तो वैसे भी जगत प्रसिद्ध है, मगर इस बार यहां की होली केवल आनंद ही नहीं सामाजिक सौहार्द्र, सांस्कृतिक समरसता तथा सामाजिक परिवर्तन के सम्मानित क्षण बनकर विश्व रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज कराने जा रही है। योगी सरकार के प्रयासों से यहां 2000 से अधिक विधवाएं एक साथ होली खेलकर एक अनूठा रिकॉर्ड बनाने जा रही हैं। इस क्रम में, वृंदावन के सामाजिक संगठनों के साथ मिलकर उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग होली पर 'विधवाओं की होली-2025' के तौर पर एक यूनीक इवेंट का आयोजन कर गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने की दिशा में प्रयास करेगी।

ऐसे में, इस बार होली का त्योहार न केवल विधवाओं की बेरंग जिंदगी में खुशियों का रंग घोलने का माध्यम बनेगा बल्कि इतिहास व विश्व रिकॉर्ड में दर्ज होने के साथ ही समाज में सशक्त संदेश देने का माध्यम भी बनेगा।

पारंपरिक लोक गायन, लोक नृत्य व भक्ति गीतों की होगी प्रस्तुति

योजना के अनुसार, इस समारोह में पारंपरिक लोक गायन, लोक नृत्य, भक्ति गीत जैसी प्रस्तुतियां भी होंगी। आयोजन में ऑर्गेनिक रंगों का इस्तेमाल होगा तथा इसमें अंतर्राष्ट्रीय गणमान्य व्यक्तियों, मीडिया तथा भक्तों की भागीदारी होगी। इस आयोजन को सफलतापूर्वक आयोजित करने के लिए एक विशिष्ट टीम के गठन की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। कार्यक्रम में गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के पदाधिकारियों की उपस्थिति में आयोजित किया जाएगा जिससे उन्हें विभिन्न पहलुओं की विवेचना समेत प्रमाणन प्रक्रिया को पूरा करने में भी आसानी होगी।

पुरानी वर्जनाओं को तोड़ने का माध्यम है 'विधवाओं की होली': 'विधवाओं की होली' एक अनूठा सांस्कृतिक उत्सव है। परंपरागत रूप से, भारत में विधवाओं से होली जैसे त्योहारों सहित संसारिक सुखों को त्यागने की अपेक्षा की जाती थी, लेकिन भगवान कृष्ण के दिव्य प्रेम से जुड़े शहर वृंदावन में यह एक क्रांतिकारी बदलाव के तौर पर देखा जाता है। वृंदावन में विधवाओं की होली एक सांस्कृतिक और सामाजिक आयोजन है जो सदियों पुरानी वर्जनाओं को तोड़ता है। विधवाओं को मुख्यधारा के समारोहों में शामिल करने के प्रयास के रूप में शुरू किया गया यह त्योहार सशक्तिकरण और समावेशिता के एक प्रतिष्ठित आयोजन में बदल गया है। हर साल, वृंदावन के विभिन्न आश्रमों से हजारों विधवाएं होली पर खुद को जीवंत रंगों, संगीत और भक्ति में सराबोर कर लेती हैं। इस आयोजन ने सामाजिक परिवर्तन, सम्मान व प्रसन्नता के प्रतीक के रूप में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त की है। ऐसे में, अब योगी सरकार ने इसे अब विश्व रिकॉर्ड से जोड़ने की तैयारी कर ली है।

सांस्कृतिक पुनरुत्थान व सामाजिक सद्भाव की दिशा में बनेगा 'मील का पत्थर': वर्ष 2025 में योगी सरकार ने सामाजिक कल्याण संगठनों के सहयोग से 2000 से अधिक विधवाओं के साथ सबसे बड़े होली समारोह का गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने का प्रयास करने जा रही है जो सांस्कृतिक पुनरुत्थान और सामाजिक सद्भाव में एक मील का पत्थर साबित होगा। उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग वृंदावन में भव्य 卐विधवाओं की होली-2025卐 कार्यक्रम आयोजित करेगी जिसमें गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड स्थापित करते हुए उत्तर प्रदेश की समावेशिता व सांस्कृतिक समृद्धि को प्रदर्शित किया जाएगा।

मूसानगर-गजनेर मार्ग होगा चौड़ा

हजारों ग्रामीणों में मिलेगा लाभ

ग्रामीण क्षेत्र में बढ़ सकेगा व्यापार

अखिलेश शुक्ला

कानपुर: प्रदेश के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम, खादी एवं ग्रामोद्योग, रेशम उद्योग, हथकरघा एवं वस्त्रोद्योग मंत्री राकेश सचान के प्रयास को सफलता मिल गई। अब कानपुर नगर व देहात को जोड़ने वाले प्रमुख मार्ग मूसानगर-गजनेर मार्ग का चौड़ीकरण किया जाएगा। इससे कानपुर नगर व देहात से जुड़े ग्रामीण इलाकों में रोजगार के अवसर भी बढ़ सकते हैं।

प्रदेश के प्रभावशाली मंत्री राकेश सचान के अनुरोध पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कानपुर के भोगनीपुर विधानसभा क्षेत्र में मूसानगर-गजनेर मार्ग से किसवा दुरौली तक अन्य जिला मार्ग (अ0जि0मा0) के चौड़ीकरण कार्य को मंजूरी दे दी है। इसके लिए शासनादेश भी जारी कर दिया गया। मंत्री राकेश सचान ने बताया कि कानपुर मंडल के अंतर्गत जनपद कानपुर नगर में गजनेर-मूसानगर-मनकौघाट मार्ग के चौड़ीकरण एवं सुदृढ़ीकरण के लिए 33.52 करोड़ रुपये की प्रशासकीय एवं वित्तीय स्वीकृति दी गई है। इस कार्य के लिए चालू वित्तीय वर्ष 2024-25 में राज्य सड़क निधि से 6.55

मंत्री राकेश सचान के प्रयास में मिली मंजूरी, सीएम से आभार व्यक्त किया

करोड़ रुपये की वित्तीय स्वीकृति जारी की गई है।

मंत्री ने कहा कि इस सड़क के चौड़ीकरण से भोगनीपुर क्षेत्र के लोगों को सुगम यातायात की सुविधा मिलेगी और स्थानीय व्यापार को बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने कहा कि यह सड़क न केवल ग्रामीण जनता के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि इससे कानपुर और आसपास के औद्योगिक क्षेत्रों से जुड़ाव भी बेहतर होगा। मंत्री राकेश सचान ने इस परियोजना को क्षेत्र के लिए बड़ी सौगात बताते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ग्रामीण क्षेत्रों के बुनियादी ढांचे के विकास के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध है। इस सड़क के चौड़ीकरण से क्षेत्र के नागरिकों, किसानों और व्यापारियों को सीधा लाभ मिलेगा।

हिन्दी साप्ताहिक
निशंक न्यूज

भारत ने 9 महीने में दूसरा आईसीसी टाइटल जीता

स्पोर्ट्स डेस्क, दुबईः भारत ने 9 महीने के अंदर दूसरा आईसीसी टाइटल जीत लिया है। टीम ने दुबई में न्यूजीलैंड को 4 विकेट से चैंपियंस ट्रॉफी फाइनल हराया। रोहित शर्मा की कप्तानी में टीम ने जून 2024 में टी-20 वर्ल्ड कप भी जीता था। रविवार को दुबई में न्यूजीलैंड ने पहले बैटिंग करते हुए 7 विकेट खोकर 251 रन बनाए। भारत ने 49वें ओवर में 6 विकेट के नुकसान पर टारगेट हासिल कर लिया। कप्तान रोहित शर्मा ने 76, श्रेयस अय्यर ने 48 और केएल राहुल ने 34 रन बनाए। गेंदबाजी में कुलदीप यादव का रोल बहुत बड़ा रहा। उन्होंने 2 ओवर के अंदर रचिन रवींद्र और केन विलियमसन को पवेलियन भेजा। वरुण चक्रवर्ती ने भी 2 विकेट लिए। रवींद्र जडेजा ने 10 ओवर में महज 30 रन देकर 1 विकेट लिया, उन्होंने ही 49वें ओवर में विनिंग बाउंड्री लगाई।

चैंपियंस ट्रॉफी फाइनल में न्यूजीलैंड को हराया

2024 में टी-20 वर्ल्ड कप जीता था

252 रन के टारगेट के सामने भारत को कप्तान रोहित शर्मा और शुभमन गिल ने मजबूत शुरुआत दिलाई। दोनों ने सेंचुरी पार्टनरशिप की। रोहित ने तेजी से फिफ्टी लगाई, उन्होंने 7 चौके और 3 छक्के लगाकर 76 रन बनाए। उनकी पारी ने टीम को मैच से बाहर नहीं जाने दिया।

जीत के हीरो

- **वरुण चक्रवर्तीः** टॉस जीतकर पहले बैटिंग करने उतरी न्यूजीलैंड को रचिन रवींद्र और विल यंग ने तेज शुरुआत दिलाई। वरुण ने यंग को बोल्ड किया और भारत को पहला विकेट दिलाया। उन्होंने ग्लेन फिलिप्स को भी बोल्ड किया।
- **श्रेयस अय्यरः** 20वें ओवर में 2 विकेट गिर जाने के बाद श्रेयस ने भारत को संभाला। उन्होंने अक्षर पटेल के साथ फिफ्टी पार्टनरशिप की और 48 रन बनाकर टीम को 200 के करीब पहुंचाया।
- **केएल राहुलः** 39वें ओवर में चौथा विकेट गिरने के बाद राहुल आखिर तक टिके रहे। उन्होंने 1 चौका और 1 छक्का लगाकर 34 रन बनाए और टीम को जीत दिला दी।

टर्निंग पॉइंट

- टॉस जीतकर पहले बैटिंग करने उतरी कीवी टीम ने मजबूत शुरुआत की थी। कुलदीप यादव 11वां ओवर फेंकने आए, उन्होंने पहली ही गेंद पर सेट बैटर रचिन रवींद्र को बोल्ड कर दिया। उन्होंने अगले ओवर में केन विलियमसन को भी कैच करा दिया। 2 बड़े विकेट गिरने के बाद न्यूजीलैंड का स्कोरिंग रेट गिर गया और टीम बड़ा स्कोर नहीं बना सकी।

मैच रिपोर्ट

- मिडिल ओवर्स में बिखरा न्यूजीलैंड दुबई में रविवार को न्यूजीलैंड ने पहले पावरप्ले में 69 रन बना दिए। मिडिल ओवर्स में टीम ने 4 विकेट गंवा दिए, टीम इस दौरान 103 रन ही बना सकी। आखिरी 10 ओवर में टीम ने 79 रन बनाए और स्कोर 251 तक पहुंचा। डेरिल मिचेल ने 63 रन की पारी खेली। भारत से मोहम्मद शमी और रवींद्र जडेजा ने 1-1 विकेट लिया।
- रोहित-शुभमन ने भारत को मजबूत शुरुआत दिलाई 252 रन के टारगेट का पीछा करने उतरी टीम इंडिया से ओपनर्स ने 105 रन की पार्टनरशिप की। शुभमन 31, रोहित 76 और विराट 1 ही रन बनाकर आउट हो गए। यहां से श्रेयस ने 48 और अक्षर ने 29 रन बनाकर टीम को संभाला। आखिर में राहुल ने 34, हार्दिक पंड्या ने 18 और रवींद्र जडेजा ने 9 रन बनाकर टीम को जीत दिला दी।

फाइटर ऑफ द मैच

- 251 रन को डिफेंड करने उतरी कीवी टीम ने 19वें ओवर में शुभमन गिल का विकेट लिया। अगले ही ओवर में माइकल ब्रेसवेल ने विराट कोहली को एलबीडब्ल्यू कर दिया। ब्रेसवेल ने 10 ओवर में महज 28 रन दिए और 2 बड़े विकेट लिए। उन्होंने ही बैटिंग में 40 गेंद पर 53 रन बनाकर टीम को 250 के पार पहुंचाया था।

निशंक न्यूज

संपादकीय

कानपुर ■ सोमवार ■ 10 मार्च 2025

आस्था में पुण्य प्रदान करने का सामर्थ्य

द्वैत के भीतर हमें समाज में आस्तिकता और नास्तिकता का प्रभाव भी दिखाई देता आया है। हर आस्तिक व्यक्ति की सबसे बड़ी शक्ति 'आस्था' होती है, जो व्यक्ति की जीवनी शक्ति बनती है। समाज में एक बड़ी पुरानी कहावत चली आ रही है कि 'जैसा खाए अन्न, वैसा होए मन' और 'जैसा पीए पानी, वैसी होए बानी'। इसका सीधा-सा अर्थ यह है कि हमारा चिंतन हमारे खान-पान के अनुसार ही बनता है। हमें संसार में द्वैत दिखलाई देता है यानी सच के साथ झूठ, दिन के साथ रात, ठण्ड के साथ गर्मी, सफेद के साथ काला और सकारात्मकता के साथ नकारात्मकता सदा रहती ही है। इसी द्वैत के भीतर हमें समाज में आस्तिकता और नास्तिकता का प्रभाव भी दिखाई देता आया है। हर आस्तिक व्यक्ति की सबसे बड़ी शक्ति 'आस्था' होती है, जो व्यक्ति की जीवनी शक्ति बनती आई है। 'आस्था' की शक्ति को तुलसीदास के शब्दों में देखा जा सकता है

'एक भरोसो, एक बल, एक आस बिस्वास।
एक राम घनस्याम हित, चातक तुलसीदास।'

इधर प्रयागराज में 'महाकुम्भ' बड़ी धूमधाम के साथ संपन्न हुआ है, जहां 'आस्था का महासागर' हिलोरें ले रहा था और पूरे भारत से जाति, धर्म, वर्ग और ऊंच-नीच के भेद की परवाह किए बिना करोड़ों नर-नारी पतितपावनी मां गंगा में स्नान करने संगम-तट पर पहुंच रहे थे। इन करोड़ों नर-नारियों की शक्ति वस्तुतः उनकी 'आस्था' ही थी, जिसके बल पर वे रेलों और बसों के साथ ही पैदल चल-चल कर 'संगम तट' पर पहुंचे। आज जाने क्यों, ब्रह्ममुहूर्त में प्रयागराज के संगम तट से एक जोरों की बहस का स्वर सुनकर मुझे लगा कि इस बहस को तो अवश्य सुनना चाहिए। असल में यह बहस 'आस्था' और 'नास्तिकता' के बीच हो रही थी और चिढ़ी हुई नास्तिकता कुछ अधिक ही गुस्से में आस्था से सवाल पर सवाल पूछे जा रही थी। आस्था शांत भाव से उत्तर दे रही थी। नास्तिकता का सवाल सबसे पहले 'संगम तट' की गंगा से यह था कि करोड़ों व्यक्तियों के जो 'पाप' तुम रोज़ धो रही हो, उन्हें ले जाकर रखती कहां हो? महाकुंभ में उमड़े जनसमूह को उनकी असीम श्रद्धा के अनुसार स्नान कराने वाली पतितपावनी 'गंगा' ने शांत भाव से उत्तर दिया, 'नास्तिकता बहन! मैं किसी का भी पाप या पुण्य अपने पास नहीं रखती, बल्कि ले जाकर सब कुछ सागर को अर्पित कर देती हूं।'

गंगा की यह बात सुनकर नास्तिकता सागर के पास जाकर बड़े अभिमान के स्वर में बोली, 'ऐ सागर! करोड़ों लोगों के पाप और पुण्य गंगा से लेकर तू कहां रखता है? मुझे साफ-साफ बता।' सागर को नास्तिकता की अभिमान भरी भाषा बुरी तो लगी, लेकिन वह धैर्यपूर्वक शांत भाव से बोला कि मैं तो अपने पास कुछ भी नहीं रखता, बल्कि सूर्य भगवान के ताप से सारे पाप-पुण्य को 'भाप' बना-बना कर बादलों को दे देता हूं। अब क्या था, गुस्साई नास्तिकता सागर को छोड़ कर बादलों के पास जा पहुंची और बोली, 'अरे बादलो! अब तुम मुझे बताओ कि सागर गंगा से मिले जन-जन के जो पाप और पुण्य तुम्हें भाप के रूप में सौंप देता है, उनको तुम कहां रखते हो?'

बादल गरज कर बोले कि सुन नास्तिकता! हम कुछ भी अपने पास नहीं रखते। हम तो वर्षा के रूप में सारे के सारे पाप और पुण्य भूमि को लौटा देते हैं, इसलिए तुम जानना ही चाहती हो तो भूमि से ही जाकर पूछो। व्यर्थ में हमारे सिर पड़ कर हमें तंग मत करो।

बुरी तरह झल्लाई हुई नास्तिकता आखिर भूमि के पास आई और उससे भी वही सवाल पूछा कि जो पाप और पुण्य गंगा में नहाकर लोग छोड़ आते हैं और बादल तुम्हें वर्षा के रूप में दे देते हैं, उनका तुम क्या करती हो? भूमि ने बड़े ही धैर्यपूर्वक नास्तिकता से कहा-' तुम शायद नहीं जानती कि मैं 'माता' हूं। शास्त्र कहते हैं- 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्या', इसलिए मां होने के नाते मैं तो सब कुछ 'अन्न और जल' के रूप में इस सारे संसार को ही लौटा देती हूं।

मेरी कोख से उपजा हुआ अन्न संसार का हर मानव खाता है और मेरे कुओं, तालाबों, झरनों और नदियों आदि का जल जन-जन पीता है। जो कुछ भी अच्छा या बुरा मां गंगा लेती हैं, वही सब कुछ जब मुझ तक पहुंचता है, तो मैं उसे अन्न-जल के रूप में संसार को लौटा देती हूं। आस्था उसी 'पाप-पुण्य' को अन्न के रूप में खाकर 'पुण्य' बना लेती है, जबकि तुम नकारात्मक दृष्टि होने के कारण उसे 'पाप' ही मानती हो। याद रक्खो, जैसा खाए अन्न, वैसा होए मन और जैसा पीए पानी, वैसी होए बानी।

'आस्था तो पाप को भी, पुण्य बनाती आप।
नास्तिकता अड़ियल रहे, पुण्य को समझे पाप।'

मुझे लगा कि आस्था मुस्कुरा रही है और नास्तिकता गुस्से में तमतमा कर गंगा को गालियां दे रही है। आज मेरे 'अंतर्मन' को सचमुच संसार की सबसे बड़ी शक्ति 'आस्था' के उस रूप का पता चल गया, जो प्रयागराज में गए करोड़ों नर-नारियों की संजीवनी बन गई है।

संभव है ट्रम्प-पुतिन-मोदी शिखर सम्मेलन

राष्ट्रपति ट्रम्प और ज़ेलेंस्की मीटिंग में उभरी तल्खी के बाद दुनिया के सभी देश अमेरिका से पटरी बैठाने को तैयार हैं। हालांकि चीन तनकर खड़ा है। ट्रंप भी जानते हैं कि असल मुकाबला पुतिन से नहीं बल्कि जिनपिंग से है। वहीं मोदी-ट्रंप बैठक के बाद भारत के लिए ये समीकरण अनुकूल हैं। चीन-पाक धुरी तोड़ने को पाकिस्तान से संबंध बहाली भी सही नीति होगी।

एक सप्ताह पहले डोनाल्ड ट्रम्प और वोलोदिमीर ज़ेलेंस्की के बीच हुई तीखी नोक-झोंक अब इतिहास बन चुकी है। ओवल ऑफ़िस की उस सुबह दुनिया बदल गई और विश्व ने ताकत का अपरिष्कृत उपयोग होते देखा। अगर यूरोप ङ्क और यूक्रेनियन भीङ्क शक्ति के ऐसे प्रयोग में शालीनता और शिष्टाचार की कमी को लेकर भड़क रहे हैं, तो शायद वे सही हैं। लेकिन इतना तो वे भी जानते हैं ङ्क यदि आप कुछ अंडे नहीं तोड़ सकते, तो ऑमलेट बनाना सरल नहीं।

हैरानी जिस बात की है वह यह कि यूरोपीय और ब्रिटेन को झटका इस कदर लगा है। ब्रिटिश और फ्रांसीसी, जोकि सुरक्षा परिषद के वीटो पॉवर संपन्न स्थाई सदस्य हैं ङ्क इनके अलावा यूरोप महाद्वीप के वे तमाम अन्य देश जो विश्व मंच पर खुद को स्थापित करने की बेतहाशा कोशिश में हैं अमेरिकी डॉलर की पीठ पर सवार होने के कारण, अमेरिकियों के सामने नतमस्तक रहे, कम से कम द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से। यूरोप का सबसे उघड़ा रहस्य यह है कि यूरोपीय लोगों के अंदर अनाकर्षक अमेरिकियों के प्रति व्याप्त घृणा बमुश्किल छिपी हैङ्क उन्हें तो सिर्फ उनका पैसा चाहिए। सुएज़ के पार, गर्मियों में पेरिस के बेकरी वाले सबसे महंगे बगेट (ब्रेड) बनाकर रखते हैं ङ्क जब फ्रांस की राजधानी पेरिस आने वाले अमेरिकी पर्यटकों की भारी भीड़ के कारण हर चीज़ खत्म हो जाती है, ठीक वैसे ही, जब उन सभी को हेमिंग्वे की किताब 'ए मूवेबल फीस्ट' के एक या अन्य संस्करण की तलाश भी रहती है। ट्रम्प एंड कंपनी ङ्क जेडी वेंस, एलन मस्क और अन्य की एक बात है कि उनके पास वह करने के वास्ते कोई वक्त नहीं है, जिसे जाने-माने पत्रकार शेखर गुप्ता 'तानपुरा-सेटिंग' कहते हैं। इसका मतलब है कि यूरोप, जिसे औपचारिक संवाद और व्यवहार में तमाम तरह का तामझाम और अलंकार बहुत पसंद है, जिसको 'इग्लाइट' और 'लिबर्टे' और यहां तक कि 'फ्रैटरनाइट' जैसे कलिष्ट शब्दों में पिरोया जाता है ङ्क हालांकि, यहां आपको उत्तरी अफ्रीका में फ्रांस के कुछ दशक पहले के इतिहास पर नज़र डालनी चाहिए, खासकर अल्जीरिया में, जहां के श्वेत फ्रांसीसी भी 'पाइड नोयर' या 'ब्लैक फीट' पुकारे जाते थे, क्योंकि वे मुख्यभूमि के फ्रांसीसियों जितने गोरे नहीं थे ङ्क यह सब आत्मा को इतना झकझोरने और उद्वेलित करने वाला है, क्योंकि वे जानते हैं कि आखिरकार उनके रखे अनाप-शाप दाम अटलांटिक पार से आए अमेरिकी ही चुका सकते हैं।

खैर, ट्रम्प और वेंस ने अभी-अभी घोषणा की है कि इस सारी 'तानपुरा-सेटिंग' का समय समाप्त हो चुका है। या फिर आप अपना 'तानपुरा सेट करना' जारी रख सकते हैं, लेकिन हमारे समय या हमारे पैसे की एवज पर नहीं। इसलिए यूक्रेन का अंतिम यूक्रेनी तक लड़ने का निर्णय मुबारक हो, लेकिन अमेरिकी पैसे पर नहीं। कम से कम अफगानिस्तान ने अमेरिका और यूरोप को एक बात सिखाई है ङ्क किसी और की लड़ाई लड़ने का मतलब यह नहीं है कि आपके फौजी इसमें मरें। शायद इसीलिए उन्होंने अपना अपराध बोध कम करने को अपनी थैली की डोरी ढीली की थी।

ट्रम्प ने उस सुबह ओवल ऑफिस में यूरोप के पाखंड को उजागर किया। तीन साल से यूरोप और कनाडा व्लादिमीर पुतिन से लड़ने के लिए ज़ेलेंस्की को उकसाते आए है, सिवाय इसके कि अफ़गानिस्तान के उलट, वहां वे अपने फौजी मरवाने को तैयार नहीं हैं। दुनिया को इस दिशा में आगे बढ़ने में एक हफ़्ते से भी कम समय लगा। सिर्फ़ ज़ेलेंस्की ही नहीं, हर कोई ट्रम्प के नेतृत्व वाली 'नई साहसी दुनिया' के लिए तैयारी कर रहा है, क्योंकि वे जानते हैं कि उनके पास कोई और विकल्प नहीं है। हाल-फिलहाल केवल चीनी ही तनकर सामने खड़े हैं। इसके क्या मायने हैं, आप जानते हैं। ट्रंप भी मानते हैं कि उनका असली मुकाबला पुतिन से नहीं बल्कि शी जिनपिंग से है। किसी और के पास नहीं, केवल चीनियों के पास ही अमेरिकियों का सामना करने लायक ताकत और कूवत है। शायद इसीलिए ट्रंप 'रूसी भालू' को गले लगाना चाहते हैं ङ्क यह करके वे उसे चीनी नेता की ड्रैगन जैसी पकड़ से दूर रखना चाह रहे हैं। यह अविश्वसनीय है कि ट्रंप ने इस मूल सच्चाई को इतनी जल्दी बूझ लिया, लेकिन वाशिंगटन डीसी के बाकी लोगों के भेजे में सालों तक यह बात नहीं आई। अच्छा, तो फिर ट्रंप युग में भारतीय विदेश नीति को लेकर कोई क्या-क्या सोचे? स्पष्टतः, मोदी सरकार ने ट्रंप से जल्द मिलने को जाकर ठीक किया, भले ही यह उसी समय हुआ जब अमेरिकी राष्ट्रपति भारतीयों को असम्मानजनक तरीके से निर्वासित कर रहे थे। इसलिए मोदी ने कड़वी गोली जल्द निगल ली, क्योंकि उन्हें पता था कि उन्हें यह करना पड़ेगा ङ्क अमेरिकी राष्ट्रपति के सामने जल्दी पड़ना और अपनी बात कहना।

> *सार यह कि मोदी सरकार को सत्ता के इस्तेमाल के बारे में कुछ नुक्ते सीखने चाहिए ङ्क मसलन, अपने दुश्मनों के साथ दोस्ती करना, अपने दोस्तों के साथ मित्रता निभाने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। यदि मोदी चाहते हैं कि भारत एक क्षेत्रीय शक्ति बने, तो उन्हें पाकिस्तान को लेकर अपने पूर्वाग्रहों को आड़े नहीं आने देना चाहिए।*

वाशिंगटन डीसी में मोदी की उपस्थिति से उनके पुराने नारे : 'अबकी बार, ट्रंप सरकार' की याद भी ताजा हो गई, जोकि बाइडेन के लिए ज़ेलेंस्की के समर्थन के एकदम उलट था। बाकी चीजें विदेश मंत्री एस जयशंकर चतुराई से साध रहे हैं। इसीलिए उन्होंने घोषणा कर दी कि भारत 'डी-डॉलराइजेशन' के साथ नहीं है, हालांकि रूस के कज़ान में चीन के नेतृत्व वाले ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में भारत ने ठीक यही करने में सहमति जताई थी, सालाना बजट पेश करने से पूर्व ही, लग्जरी मोटरसाइकिलों के लिए टैरिफ घटा दिया, क्योंकि अपने पिछले कार्यकाल में ट्रंप यही करवाना चाहते थे। संक्षेप में, ट्रंप को खुश करने की कोशिश की जा रही है या कम से कम उन्हें शांत करने, उन्हें यह दिखाने की कि हमारा इरादा उनका नुकसान करने का नहीं है। आप जानते हैं कि वह एक अप्रत्याशित मिजाज़ वाले बंदे हैं- मैक्सिको और कनाडा पर जो शुल्क लगाने की उन्होंने हाल ही में घोषणा की थी, फिलहाल उस पर अमल टाल दिया हैङ्क सो उनको राज़ी रखने में भलाई है। यह दिखावा न करें कि आप गुटनिरपेक्ष हैं, जोकि आप वास्तव में नहीं हैं, और न ही उनके साथ अपनी दोस्ती बहुत गहरी होने के बारे में सार्वजनिक रूप से दम भरें, जैसा कि असुरक्षित 'दोस्तों' की आम आदत होती है। जहां तक आगामी अमेरिका-रूस संबंध मधुर होने की बात है, भारत के सामने पासा फेंका जा चुका है और बाज़ी खेलकर जीतनी होगी। यदि मोदी दांव अच्छे ढंग से खेल लेते हैं, तो पश्चिमी और पूर्वी, दोनों जगह भारत की स्थिति बेहतर बना पाएंगे।

बीमारी, दवा और सावधानी

देसी दवाइयों के नाम पर भी जो गड़बड़ घोटाला हो रहा है, उसके बारे में खबरें आती तो हैं, लेकिन हम लोगों को व्हाट्सएप से कहां इतनी फुर्सत है कि हम उस पर ज़्यादा सोचें। देसी से मेरा मतलब आयुर्वेदिक नहीं है, वह तो एक अहम भारतीय चिकित्सा पद्धति है। लेकिन कुछ स्वार्थी तत्व देसी के नाम पर ऐसे ही कुछ अजीबोगरीब बेचते रहते हैं जिससे फायदा तो दूर, नुकसान ज़रूर हो जाते हैं। तीस-चालीस साल पहले सुनते थे कि घुटने के दर्द के लिए शर्तिया इलाज की दुहाई देने वालों की पोल तब खुलती जब पता चलता कि स्टीरॉयड नाम की दवा मिला दी जाती थी। यह तो एक मिसाल है, लेकिन ऐसा और क्या-क्या, कहां-कहां हो रहा है, कोई कुछ कह नहीं सकता। आज मुझे लंबे अरसे के बाद यह स्टीरॉयड वाली बात इसलिए याद आई कि हमारे एक साथी डॉक्टर ने एक अखबार की क्लिपिंग शेयर की, जिसे पढ़कर किसी के भी पैरों तले से ज़मीन खिसक जाए। खबर में बताया गया है कि देसी दवाइयां, जो मधुमेह के लिए बेची जा रही थीं, उनमें मधुमेह की एलोपैथिक दवाइयों की दस गुना मात्रा पाई गई। इस गोलमाल का पर्दाफाश तब हुआ जब कोई वीआईपी ऐसी दवाई ले रहा था। तीन दिन बाद ही उसका ब्लड शुगर स्तर इतना नियंत्रण में आ गया कि उसे इंसुलिन लेने की ज़रूरत ही न पड़ी। उसने आयुर्वेदिक विशेषज्ञों से बात की। वे भी इस चमत्कार पर हैरान हुए। उन्होंने दवाई की टेस्टिंग की सलाह दी। तब मामले का खुलासा हुआ।

सोचने वाली बात तो यह है कि एलोपैथिक डॉक्टर तो इस तरह की दवाइयां लिखते वक्त कई तरह के जमा-घटा करते हैं, मरीज़ की उम्र, वजन, उससे जुड़े अन्य पैरामीटर्स देखकर, जांच कर मधुमेह की दवाई की डोज़ तय करते हैं, लेकिन देखिए किस तरह से दस गुना डोज़ देसी दवाई के नाम पर उन्हें परोसी जा रही थी। यह मामला सामने आ गया, न जाने कितनी जगह ऐसा चल रहा होगा।

आपको क्या लगता है इनकी क्या सज़ा होनी चाहिए? 'रोटी' फिल्म का एक गीत था, जो 1974 में आई थी। उसका गाना 'यह जो पब्लिक है, सब जानती है' रोमांचित करता था। लेकिन आज पचास साल बाद यही लगता है कि पब्लिक कुछ नहीं जानती, बड़ी ताकतें, राजनीतिक, व्यापारिक और धार्मिक सब कुछ जानती हैं कि कैसे जनता का इस्तेमाल करना है। और कुछ नहीं, बस, आराम से गाना सुनिए। सावधान रहिए।

घर के मुख्य दरवाजे को बनवाते समय बिल्कुल न करें ये गलतियां

तरक्की पर पड़ेगा बुरा असर

फीचर डेस्कः आज के समय में हर कोई सक्सेसफुल इंसान बनना चाहता है। इसलिए वह हर तरह के जतन करता है। लेकिन इसके बावजूद सफलता प्राप्त नहीं होती है। सफल व्यक्ति बनने के लिए मेहनत और किस्मत दोनों का मजबूत होना जरूरी माना जाता है। ऐसे में घर का वास्तु दोष व्यक्ति के जीवन में बहुत ही जरूरी चीज मानी जाती है। आमतौर पर जब कोई घर का निर्माण कराता है तो वास्तु के नियमों को जरूर पालन करता है। लेकिन मुख्य द्वार को अनदेखा कर देते हैं जिसके कारण तरक्की में अड़चने आनी शुरू हो जाती है। अगर आप मेन गेट के इन वास्तु संबंधी चीजों को ध्यान रखेंगे तो कभी भी घर में धन-धान्य की कमी नहीं होगी।

मुख्य द्वार संबंधी वास्तु नियम

- जब भी मेन गेट बनवा रहे हैं तो इस बात का जरूर ध्यान रखें कि वह टी-जंक्शन या टी-चौराहे के सामना न बना हो। क्योंकि वास्तु के अनुसार घर में अनिष्ट शक्तियों अधिक घुसने लगती है। वास्तु के अनुसार, मुख्य द्वार की स्थिति घर के बीचों-बीच में नहीं होनी चाहिए। घर के प्रवेश द्वार में किसीभी तरह की छाया नहीं पड़नी चाहिए। इसलिए खंभा, पेड़ या किसी अन्य चीजें मुख्य द्वार की ओर नहीं होना चाहिए।
- वास्तु के अनुसार, मुख्य द्वार की ओर जाने वाला रास्ते में अंधेरा नहीं होना चाहिए क्योंकि यह निगेटिव एनर्जी को आकर्षित करता है। जिसके कारण घर में रहने वाले लोगों के बीच तनाव हो सकता है। इसलिए हमेशा प्रवेश द्वारा में प्रकाश आना चाहिए। इससे घर में समृद्धि को आकर्षित होगी।
- घर का मुख्य द्वार इस तरह होना चाहिए कि बाहर से आना व्यक्ति आसानी से प्रवेश कर सकें। वास्तु के अनुसार, मुख्य द्वार के सामने कभी भी लिफ्ट या फिर सीढ़ी नहीं होनी चाहिए। क्योंकि इससे घर में निगेटिव एनर्जी अधिक आती है।
- वास्तु के अनुसार, मुख्य द्वार जमीन से जुड़ा नहीं होना चाहिए हमेशा सीढ़ियों की संख्या विषम होनी चाहिए जैसे 3, 5, 7, 11 आदि।

भूलकर भी घर की इस दिशा में न बनवाएं सीढ़ियां, होगी धन हानि

घर का हर एक हिस्सा बनवाते समय वास्तु का पूरा ध्यान रखना बहुत जरूरी है। क्योंकि वास्तु के मुताबिक, जातक के द्वारा गलत तरीके से बनाई गई चीज वास्तु दोष का कारण बन सकती है। इसी क्रम में घर में मौजूद सीढ़ियां वास्तु के हिसाब से काफी जरूरी मानी जाती है। क्योंकि इससे वहां रहने वाले व्यक्ति के जीवन पर अच्छा और बुरा असर पड़ सकता है। वास्तु के अनुसार, सीढ़ियों से निकलने वाली शक्तिशाली एनर्जी घर के सदस्यों की किस्मत खोल सकती सकती है और यह आपको बर्बाद भी कर सकती है। जानिए घर में सीढ़ियां बनाते समय किन बातों का खास ख्याल रखना चाहिए।

अगर आप घर में आंतरिक सीढ़ी बनाना चाहते हैं तो इसके लिए पूर्व से पश्चिम या फिर उत्तर से दक्षिण की ओर की दिशा को सबसे बेस्ट माना जाता है। इससे परिवार के सदस्यों के स्वास्थ्य पर अच्छा असर पड़ता है। इसके अलावा घर के दक्षिण-पश्चिम यानि कि नैऋत्य कोण में भी सीढ़ियां बनना अच्छा माना जाता है। क्योंकि इस दिशा में पृथ्वी तत्व की प्रधानता होती है। इससे धन-संपत्ति में वृद्धि होती है और स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

इस दिशा की ओर न बनवाएं सीढ़ियां

- वास्तु शास्त्र के मुसाबिक, घर का बीच के भाग यानि कि ब्रह्म स्थान में सीढ़ियां नहीं बनवानी चाहिए। क्योंकि यह जगह सबसे ज्यादा सेंसटिव होती है। इस जगह पर सीढ़ियां बनवाने से कई समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। इसके अलावा ईशान कोण में भी सीढ़ियां बनवाने से पहले एक्सपर्ट से जरूर बात कर लें। क्योंकि यह दिशा देवों की दिशा मानी जाती है जिसे हल्का और खुला रखना बहुत जरूरी है इसलिए इस दिशा में सीढ़ियां बनाने से हानि हो सकती है। इससे पैसों की दिक्कत के साथ बच्चों के करियर में रुकावट आ सकती हैं।
- वास्तु के अनुसार, सीढ़ियां ऐसी बनानी चाहिए कि वह बाहरी लोगों को तुरंत दिखाई न दे। ऐसा इसलिए है क्योंकि इससे आपके घर में तनाव और परेशानी आ सकती है।

■ इस लेख में निहित किसी भी जानकारी/सामग्री/गणना की सटीकता या विश्वसनीयता की गारंटी नहीं है। विभिन्न माध्यमों/ज्योतिषियों/पंचांग/प्रवचनों/मान्यताओं/धर्मग्रंथों से संग्रहित कर ये जानकारियां आप तक पहुंचाई गई हैं। हमारा उद्देश्य महज सूचना पहुंचाना है, इसके उपयोगकर्ता इसे महज सूचना समझकर ही लें। इसके अतिरिक्त, इसके किसी भी उपयोग की जिम्मेदारी स्वयं उपयोगकर्ता की ही रहेगी।

बिना मेकअप के भी बेहद खूबसूरत दिखती हैं

पूजा रामचंद्रन

फीचर डेस्कः बॉलीवुड एक्ट्रेसेस अक्सर अपनी ग्लैमरस लाइफस्टाइल को लेकर लाइमलाइट लेती हैं जबकि साउथ फिल्म इंडस्ट्री में तमाम ऐसी अदाकाराएं हैं जो नैचुरल लुक में भी बेहद खूबसूरत हैं। आज हम आपको साउथ की एक ऐसी ही एक्ट्रेस के बारे में बता रहे हैं जो बिना मेकअप के भी बहुत खूबसूरत हैं और अक्सर अपनी तस्वीरों से फैंस का दिल जीत लेती हैं। दरअसल, यहां हम साउथ इंडियन ब्यूटी पूजा रामचंद्रन के बारे में बात कर रहे हैं जो अभिनय के अलावा वीजे और एक शानदार मॉडल भी हैं। देखा जाए तो इनकी सुंदरता के आगे बॉलीवुड अदाकाराओं का ग्लैमरस अंदाज भी फीका पड़ जाएगा। एक्ट्रेस की खूबसूरती के चर्चे पूरे साउथ में हैं जो आए दिन ही अपनी तस्वीरें शेयर कर लोगों का अटेंशन लेती हैं। बिना मेकअप के भी पूजा कमाल की दिखती हैं। पूजा अपने घुंघराले बाल, कजरारी आंखें और प्यारी सी स्माइल से किसी को भी मोह सकती हैं। पूजा रामचंद्रन ने अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद ब्यूटी पेजेंट में पार्टीसिपेट किया था और मिस कोयंबटूर 2004 का खिताब जीता था। पूजा रामचंद्रन मिस कोयंबटूर 2004 का अवॉर्ड जीतने के बाद एक साल बाद ही मिस केरल 2005 की रनरअप रहीं और इसके बाद उन्होंने एक्टिंग में एंट्री मारी। अभिनय में आने से पहले पूजा एसएस म्यूजिक में बतौर वीजे काम करती थीं और बाद वें तेलुगू रियलिटी टीवी शो बिग बॉस तेलुगू 2 में वाइल्ड कार्ड कंटेस्टेंट के रूप में दिखीं।

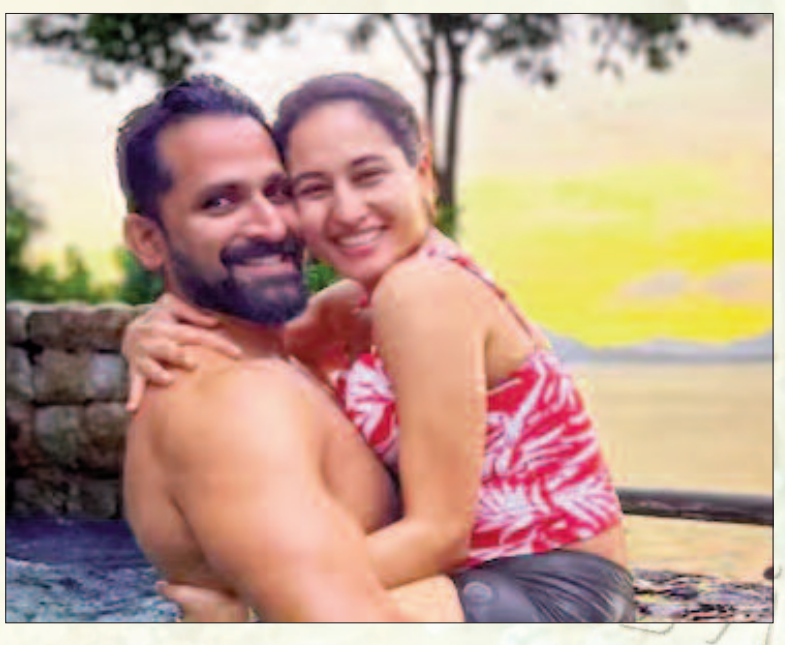

कार्यालय संवाददाता, कानपुरः होली रंगों और उत्साह का त्योहार माना जाता है। इस दिन लोग अबीर-गुलाल लगाकार भेद-भाव को खत्म करते हैं। अगर इस दिन रंगों का चुनाव राशि के अनुसार किया जाए तो आपकी किस्मत भी चमक सकती है।

रंगों के अनुसार इस होली चमकेगी आपकी किस्मत

मेष
■ इस राशि के जातक उत्साही होते हैं। इस बार होली के पर्व पर यदि आप लाल और गुलाबी रंग का इस्तेमाल करेंगें तो यह आपके लिये काफी भाग्यशाली रहेगा।

वृषभ
■ वृषभ जातकों के लिए यदि कोई रंग सबसे अधिक अनुकूल है तो वह है हल्का नीला और आसमानी रंग। यह रंग उनमे सहजता प्रदान करता है और उनके जीवन में स्थिरता और सौहार्द लेकर आता है।

मिथुन
■ मिथुन राशि के जातक इस होली पर हल्के हरे रंग से खेल सकते हैं। वैसे नारंगी व गुलाबी रंग भी इनके लिये सही रहेंगें। ये रंग इनमें रोमांच, उत्साह व उर्जा का संचार तो करेंगें ही साथ ही समृद्धि लाने वाले भी साबित होंगें।

कर्क
■ कर्क राशि के जातक भावुक होते हैं इसलिये इन्हें हल्का नीला, चांदी और सफ़ेद रंग से होली का त्यौहार मनाना चाहिये। इससे इन्हें शांति और धीरज मिलेगा।

सिंह
■ सिंह जातक काफी उर्जावान होते हैं, इनकी प्रचडंता को काबू में रखने के लिये महरुम रंग कारगर होगा। इसके अलावा सुनहरा और तांबा रंग भी इस अग्नि राशि के लिए अनुकूल हैं।

कन्या
■ आपके लिये गहरा हरा रंग काफी शुभ रहेगा। इस रंग के प्रयोग से आप अपने अंदर एक नई स्फूर्ति एक नये जोश को महसूस करेंगें।

तुला
■ सफेद रंग के अलावा आप बैंगनी, भूरा और नीले रंग का इस्तेमाल कर सकते हैं। अपने आपको धीर और संयमी बनाये रखने के लिये आप हल्के नीले रंग के वस्त्राभूषण धारण कर सकते हैं।

वृश्चिक
■ गहरे लाल, मरून, और भूरे रंग से ही वृश्चिक रंग पर बेहतर प्रभाव रहेगा उनमें से अधिक व्यक्तियों को गहरा लाल रंग चुनना चाहिए क्योंकि यह रंग उनके सशक्त व्यक्तित्व को उजागर करेगा।

धनु
■ पीला और संतरी रंग धनु राशि के जातकों के लिये बहुत अच्छा रहेगा इस होली पर क्योंकि इस राशि के जातक अति उत्साही होते हैं इसलिये यह रंग इनके लिये बहुत उपयोगी होंगे।

मकर
■ इस राशि के जातक हल्के नीले व आसमानी रंगों का इस्तेमाल करें। इन रंगों के इस्तेमाल से आपमें सकारात्मक उर्जा का संचार होगा व व्यक्तित्व में स्थिरता भी आयेगी।

कुम्भ
■ इस राशि के जातक गहरे नीले रंग को काफी शुभ माना जाता है। कुम्भ जातक हमेशा कुछ न कुछ नया करने के प्रयास में रहते हैं। इसलिये यह इनमें उर्जा का संचार तो करेगा ही साथ ही व्यस्ता भरे जीवन में शांति व सुकून भी लेकर आयेगा।

मीन
■ मीन राशि के जातकों के व्यक्तित्व में अक्सर चटकते-भड़कते रंग भावनात्मक रुप से अच्छा प्रभाव डालने में सक्षम होते हैं। लेकिन पीले या हल्के पीले रंग के इस्तेमाल से इनमें अतिउत्साह व जोश का संचार होगा।

प्रहलाद की जीत के साथ ही नई फसल और बसंत के आने का उत्सव है होली, जानिए होली में अनाज क्यों चढ़ाते हैं?

हिंदू पंचांग के अनुसार, होली का पर्व चैत्र महीने के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को मनाया जाता है. इस साल होली का त्योहार 14 मार्च को मनाया जाएगा. इसके अलावा, होली से एक दिन पहले 13 मार्च को होलिका दहन किया जाएगा और 7 मार्च यानी आज से होलाष्टक की शुरुआत हो चुकी है. हर साल होली का त्योहार चैत्र माह के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तिथि को मनाया जाता है. रंगों के त्योहार को होली के नाम से जाना जाता है. इस बार होली का त्योहार 14 मार्च, शुक्रवार को मनाया जाएगा. होली से एक दिन पहले होलिका दहन करने की परंपरा है यानी 13 मार्च को होलिका दहन होगा. होलिका दहन के दिन छोटी होली के नाम से भी जाना जाता है. हिंदू पंचांग के अनुसार, फाल्गुन मास की पूर्णिमा के दिन बुराई पर अच्छाई की जीत के रूप में होलिका दहन किया जाता है. **होलिका दहन का मुहूर्तः** इस बार होलिका दहन 13 मार्च, गुरुवार को किया जाएगा. इस बार होलिका दहन की तिथि 13 मार्च को सुबह 10 बजकर 35 मिनट से शुरू होगी और तिथि का समापन 14 मार्च को दोपहर 12 बजकर 23 मिनट पर होगा।

क्या आप जानते हैं जलती हुई होली में अनाज को चढ़ाते हैं?
■ इस समय खासतौर पर गेहूं की पकने लगती है। पुराने समय से फसल आने पर उत्सव मनाने की परंपरा चली आ रही है। फसल पकने की खुशी में होली मनाने की और रंग खेलने की परंपरा है। किसान जलती हुई होली में नई फसल का कुछ भाग अर्पित करते हैं। दरअसल, जब भी कोई फसल आती है तो उसका कुछ भाग भगवान को, प्रकृति को भोग के रूप में चढ़ाया जाता है। जलती होली में अनाज डालना एक तरह का यज्ञ ही है। ये नई फसल के लिए भगवान का आभार मानने का पर्व भी है।

बसंत के आगमन का पर्व है होली
■ होली के समय से ही बंसत ऋतु की भी शुरू होती है। बसंत को ऋतुराज कहा जाता है और इस ऋतु के आने पर होली के रूप में उत्सव मनाने की परंपरा है। मान्यता है कि पुराने समय में फाल्गुन मास की पूर्णिमा पर कामदेव ने भगवान शिव की तपस्या भंग करने के लिए बसंत ऋतु को प्रकट किया था। शिव जी की तपस्या भंग हो गई तो उन्होंने गुस्से में कामदेव को ही भस्म कर दिया था। बसंत ऋतु के आगमन से वातावरण सुहावना हो जाता है। पुराने समय में अलग-अलग रंगों को उड़ाकर बसंत ऋतु के आगमन का उत्सव मनाया जाता था।

मुश्किल दिनों में स्वच्छता एक उपचार

फीचर डेस्कः *बारिश के मौसम में अगर कपड़े टाइट हों तो नमी और पसीने के कारण इंटीमेट एरिया में रेशेज हो सकते हैं। ज्यादा पसीना, उमस और गर्मी से प्राइवेट पार्ट्स के पास कभी-कभी इतनी ज्यादा खुजली और एलर्जी होती है कि चलना भी दूभर हो जाता है। उमसभरी इस गर्मी में पीरियड्स के दौरान यह समस्या और ज्यादा बढ़ जाती है, जिसकी मूल वजह पीरियड के दौरान महिलाओं द्वारा साफ-सफाई की अनदेखी होती है। देश में वुमन हेल्थ आर्गेनाइजेशन द्वारा कराये गये सर्वे में सामने आया कि महिलाओं में प्रजनन संबंधी बीमारियों के पीछे सबसे बड़ी वजह मैंस्ट्रुअल हाइजीन की अनदेखी होती है। कुछ पिछड़े इलाकों में तो आज भी महिलाएं सेनेटरी पैड की बजाय पुराने कपड़ों का इस्तेमाल करती हैं, जिसका असर उनकी सेहत पर पड़ता है। मासिक धर्म के दौरान साफ सफाई के विषय में हर लड़की और महिला को खास ध्यान रखना चाहिए।*

कॉटन के कपड़े पहनें

- उमस वाली गर्मी में कॉटन के अंडरगारमेंट्स पहनना जरूरी है। इससे हवा की आवाजाही रहती है। त्वचा पर रेशेज नहीं होते और स्किन भी साफ और सूखी रहती है। कृत्रिम रेशों से बने अंडरगारमेंट पहनने से परहेज करें, क्योंकि इसमें हवा आर-पार नहीं होती और स्किन में खुजली और जलन हो सकती है।

हाइजीन का रखें ध्यान

- सेनेटरी पैड या टैम्पून या फिर मैंस्ट्रुअल कप बदलने के बाद हाथों को अच्छी तरह से धोएं, इस्तेमाल किए हुए पैड या टैम्पून को किसी पॉलीथीन में बांधकर डस्टबिन में डालें, उनको कभी फ्लश न करें।

इंटीमेट एरिया की सफाई

- माहवारी के दिनों में ही नहीं, महिलाओं को नहाते समय अपने मातृत्व अंगों को रोजाना साफ और ताजे पानी से धोना चाहिए। इन दिनों साबुन का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए, क्योंकि उससे भी इंफेक्शन हो सकता है। वहां सफाई के लिए हल्का गर्म पानी ही काफी है। वी वॉश का इस्तेमाल सामान्य दिनों में भी करना चाहिए। अगर आप इन दिनों स्विमिंग करते हैं या कोई गेम खेलते हैं तो पसीना आने पर अपने इंटीमेट एरिया को अच्छी तरह धोकर सुखा लेना चाहिए।

रोज नहाएं

- मासिक धर्म को लेकर आज भी कई समाजों में कई पिछड़ी धारणाएं प्रचलित हैं। उन्हें रसोई में काम करने की मनाही होती है और इन दिनों उन्हें घर में अलग कमरे में रखा जाता है तथा नहाने के लिए मना किया जाता है। न नहाने से ही लगातार चार-पांच दिन तक गंदगी में रहने से उन्हें स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं होती हैं। पीरियड के दौरान स्नान जरूर करना चाहिए। इससे इन दिनों होने वाली समस्याओं जैसे पीठ दर्द, पेट में ऐंठन, मूड स्विंग जैसी समस्याओं से राहत मिलती है।

खानपान का ख्याल

- उन दिनों दर्द से राहत पाने के लिए ज्यादा चाय, कॉफी और खट्टी चीजों से परहेज करना चाहिए। इससे मासिक धर्म के रक्त में दुर्गंध आने की आशंका रहती है। वहीं एसिडिटी बढ़ाने वाले खाद्य पदार्थों से दूर रहें।

सेनिटेशन का तरीका

- आजकल बाजार में सेनेटरी नैपकिन, टैम्पूंस, मैंस्ट्रुअल कप का इस्तेमाल किया जाता है। उन दिनों में कंफर्ट महसूस हो, ऐसे एंटीबैक्टीरियल सेनेटरी नैपकिन का इस्तेमाल करना चाहिए। ब्लीडिंग यदि ज्यादा हो रही हो तो हर दो-तीन घंटे बाद पैड बदलना चाहिए। अच्छी क्वालिटी की पेंटी का इस्तेमाल करें और उसे दिन में दो बार बदलें। बालों को शेव करके साफ रखें।

अलग इनरवियर का इस्तेमाल

- पीरियड्स के दौरान अंडरवियर ज्यादा गंदी हो जाती है, उनमें बैक्टीरिया पनपने की आशंका रहती है। इन गंदे अंडरगारमेंट्स को गर्म पानी, साबुन तथा डेटोल जैसे किसी भी लिक्विड से अच्छी तरह धोएं। बाकी दिनों में इस अवधि में इस्तेमाल की जाने वाली अंडरगारमेंट न पहनें। यदि घर से बाहर कहीं जा रही हैं तो अपने साथ एक एक्स्ट्रा अंडरगार्मेंट जरूर रखें ताकि कपड़ों पर दाग धब्बे न लगें।

निशंक न्यूज

प्रकाशक मुद्रक एवं स्वामी सरस बाजपेई द्वारा नारद आफसेट 120/192/99 नारायन पुरवा कानपुर नगर से मुद्रित एवं 127/21 यू ब्लॉक निराला नगर कानपुर से प्रकाशित

संपादक
सरस बाजपेई
9838202052
स्थानीय संपादक
अखिलेश शुक्ला
9936656553
विधि सलाहकार
एडवोकेट संतोष बाजपेई
9369218747

स्थानीय कार्यालय 127/21 यू ब्लॉक निराला नगर, कानपुर। समस्त विवाद कानपुर न्यायालय के अन्तर्गत ही मान्य होंगे।